

हनुमान चालीसा

खेमराज श्रीकृष्णदास
प्रकाशन
बम्बई



हनुमानचालीसा

हनूमान-अष्टक

प्रारभ्यते

संस्करण :मार्च २०१६, सवंत् २०७२

मूल्य : २ रुपये मात्र।

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

श्रीः

अथ हनूमानचालीसा

दोहा-श्रीगुरु चरण सरोज रज्ञ
निजमनमुकुरु सुधारि। बरणौं रघुवर
विमलयश जो दायक फल चार ॥
बुद्धिहीन तनु ज्ञानिकै सुमिरौं

पवनकुमार। बलबुधिविद्या देहु मोहिं हरहु कलेश विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञानगुणसागर। जय कपीश तिहुँलोक उजागर ॥ रामदूत अतुलित बलधामा । अञ्जनिपुत्र

पवनसुत नामा ॥ महावीर विक्रमबजरंगी । कुमति निवार सुमतिके संगी ॥ कञ्चन वर्ण विराज सुवेशा। काननकुण्डलकुंचितकेशा॥ हाथ वज्र अरु ध्वजा विराजै । काँधे मूंज जनेऊ साजै ॥ शंकरसुवन

केशरीनन्दन । तेजप्रताप महाज-
गवन्दन ।। विद्यावान गुणी अति-
चातुर । रामकाज करिबेको आतुर ।।
प्रभुचरित्र सुनिबेको रसिया । राम लषण
सीता मन बसिया ।। सूक्ष्मरूप धरि
सियहि दिखावा । विकटरूप धरि लंक

जरावा ।। भीमरूप धरि असुर संहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ।। लाय
सँजीवन लषण जिलाये । श्रीरघुवीर
हर्षि उर लाये ।। रघुपति कीन्ही बहुत
बड़ाई । तुमप्रिय भरतसरिस मम-
भाई ।। सहसवदन तुम्हरो यश गायो ।

अस कहि श्रीपति कण्ठ लगायो ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा । नारद
शारद सहसअहीशा ॥ यम कुबेर
दिगपाल जहाँते । कवि कोविद कहि
सकैं कहाँते ॥ तुम उपकार सुग्रीवहिं
कीन्हा । राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना ।
लंकेश्वर भये सब जग जाना ।। युग सहस्त्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुरफल जानू ।। प्रभुमुद्रिका मेलि मुखमाहीं । जलधिलाँधि गये अचरज नाहीं ।। दुर्गम काज जगतके जेते ।

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ रामदुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा विन पैसारे ॥ सब सुख लहैं तुम्हारी शरना । तुम रक्षक काहूको डरना ॥ आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हांकते कांपै ॥ भूत पिशाच निकट नहिं

आवै । महावीर जब नाम सुनावै ।।
नाशैरोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर
हनुमतवीरा ।। संकटसे हनुमान
छुड़ावै । मन क्रम वचन ध्यान जो
लावै ।। सबपर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ।। और

मनोरथ जो कोइ लावै । तासु अमित जीवन फल पावै ।। चारों युग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ।। साधु सन्तके तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ।। अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता । असवर दीन

जानकी माता ॥ रामरसायन तुम्हरे
पासा । सादर तुम रघुपतिके दासा ॥
तुम्हरे भजन रामको पावै। जन्मजन्मको
दुख विसरावै । अंतकाल रघुबरपुर
जाई । जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ

सर्वसुख करई ॥ संकट टरै मिटै सब
पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥ जै
जै जै हनुमान गुसांई ॥ कृपा करो
गुरुदेव कि नांई ॥ यह शतवार पाठकर
जोई । छूटै बंदि महासुख होई ॥ जो
यह पढ़ै हनूमानचालीसा । होइ सिद्धि

साखी गौरीशा ॥ तुलसीदास सदा हरिचेरा । कीजै दासहृदयमहँ डेरा ॥

दो०-पवन तनय सकटहरण, मंगलमूरति रूप । राम लषण सीता सहित, हृदय बसौ सुरभूप ॥ इति श्रीहनूमानचालीसा संपूर्ण

अथ संकटमोचनहनुमानाष्टक

श्रीगणेशाय नमः ।। मत्तगयंद
छंद ।। बालसमय रवि भक्षिलियो, तब
तीनिहुँ लोक भयो अँधियारो ।। ताहिसु
त्रास भई जग को, यह संकट काहूसो
जात न टारो ।। देवन आनि करी विनती

तब छाँडि दियो रवि कष्ट निवारो ।।
को नहिं जानत है जगमें, कपि
संकटमोचन नाम तुम्हारो ।।१।। बालि
की त्रास कपीश बसै, गिरि जात
महाप्रभु पंथ निहारो ।। चौंकि महामुनि
शाप दियो, तब चाहिये कौन विचार

विचारो ।। कै द्विजरूप लिवाय महाप्रभु सो, तुम दासको शोक निवारो ।। को न० ।।२।। अंगदके संग लेन गये, सिय खोज कपीश ये बैन उचारो ।। जीवत ना बचिहो हमसों जु, बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो ।। हेरि थके तट सिंधु सबै

तब लै सियकी सुधि प्राण उबारो ॥
को न० ॥३॥ रावण त्रास दई सियको
तब राक्षसि सों कहि शोक निवारो ॥
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय
महा रजनीचर मारो ॥ चाहति सीय
अशोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका

शोक निवारो । को न० ॥४॥ बाण
लग्यो उर लक्ष्मणके, तब प्राण तजे
सुत रावण मारो ॥ लै गृह वैद्य सुषेण
समेत, तबै गिरि द्रोण सुवीर उपारो ॥
आनि संजीवनि हाथ दई, तब लक्ष्मण
के तुम प्राण उबारो ॥ को न० ॥५॥

रावण युद्ध अजान कियो, तब नाग
कि पाश सबै सिर डारो ।। श्री रघुनाथ
समेत सबै दल, मोह भयो तब संकट
भारो ।। आनि खगेश तबै हनुमान जु,
बंधनकाटि सुत्रास निवारो ।। को न०
।।६।। बंधु समेत जबै अहिरावण, लै

रघुनाथ पताल सिधारो ।। देविहि पूजि
भली विधिसों, बलि देहु सबै मिलि
मंत्र बिचारो ।। जाय सहाय भयो तबही,
अहि रावण सैन्य समेत सँहारो ।। को
न० ।।७।। काज कियो बड़ देवन के.
तुम वीर महाप्रभु देख विचारो ।। कौन

सो संकट मोर गरीब को, जो तुम सो नहिं जात है टारो ॥ बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो ॥ को नहिं० ॥८॥

दोहा - लालदेह लाली लसै, अरु धरि लाल लँगूर।
वज्रदेह दानव दलन, जय जय जय कपिशूर ॥१॥
यह अष्टक हनुमानको, विरचित तुलसीदास।
पढे भक्त जो प्रेम से, होयँ सर्व दुख नाश ॥२॥

इति संकटमोचन हनुमानाष्टक संपूर्ण

आरती बजरंगबलीकी

आरती कीजै हनुमान ललाकी। दुष्ट दलन रघुनाथ कलाकी। जाके बलसे गिरिवर कांपे। रोगदोष जाके निकट न झांके ॥टेक॥ अञ्जनी पुत्र महा बलदाई। सन्तनके प्रभु सदा सहाई ॥१॥ दे बीरा रघुनाथ पठाये। लङ्का जारि सिया सुधि लाये ॥२॥ लङ्का ऐसे कोट समुद्र ऐसी खाई। जात पवनसुत वार न लाई ॥३॥ लङ्का जारि असुर सब मारे। सीतारामजीके काज सँवारे ॥४॥ लक्ष्मण मुरछि परे धरणीमें आन संजीबन प्राण उबारे ॥५॥ पैठि पताल तोरि

यमकातर । अहिरावणके भुजा उखारे ॥६॥ बाँए भुजा असुर संहारे । दहिने भुजा सब सन्त उबारे ॥७॥ सुर नर मुनि जन आरति उतारे । जै जै जै हनुमान्‌जी उचारे ॥८॥ कञ्चनथार कपूरकी बाती । करत अञ्जनी माइ आरती ॥९॥ जो हनुमान्‌जीकी आरति गाये । बसि वैकुण्ठ अमर पद पावे ॥१०॥ लङ्क विध्वंस किये रघुराई । तुलसिदास स्वामी कीरति गाई ॥११॥

इति आरती बजरंगबलीकी सम्पूर्ण

अथ श्रीरामस्तुति प्रारम्भ

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम् नवकञ्ज लोचन कञ्ज मुखकर कञ्जपद कञ्जारुणम्॥ कंदर्प अगणित अंमित छबि नव नील नीरज सुन्दरम्। पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥ भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनम् । रघुनन्द आनंदकंद कोशलचन्द दशरथ नन्दनम्॥ सिरक्रीट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्। आजानुभुज सर चापधर संग्राम जित खरदूषणम् ॥ इति वदति

तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मनरञ्जनम् । मम हृदयकञ्ज निवास कुरु कामादिखलदलगञ्जनम् ।। मनजाहि राचो मिलहि सो वर सहजसुन्दर सांवरो । करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो । एहि भाँति गौरि अशीस सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली । तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ।

सो०- जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष न जात कहि ।
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ।।
सियावर रामचन्द्रकी जय ।।१।।

अथ श्रीरामाष्टक प्रारम्भ

हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणा केशवा ॥१॥ गोविंदा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ॥२॥ हे कृष्णा कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ॥३॥ वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम् ॥४॥ आदौ रामतपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनम्, वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीव सम्भाषणम्। वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम् पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥५॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

इति

हनुमानचालीसा

हनूमान-अष्टक

समाप्तम्



हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डिंग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

